੧ਓ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ

एक-ओं-कार सतिगुर प्रसादि

जपु जी साहब

पद्य (कविता) में अनुवाद

निवेदक

डॉ० (मेजर) बलबीर सिंह भसीन

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ

एक-ओं-कार सतिगुर प्रसादि

जपु जी साहब

पद्य (कविता) में अनुवाद

निवेदक

डॉ० (मेजर) बलबीर सिंह भसीन

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ

ੴ ओंकार
सतिनाम
करता पुरख
निरभउ
निरवैरु
अकाल मूरति
अजूनी
सैभं
गुर प्रसादि ॥

अर्थ : एक है ईश्वर।
जिसका सच्चा नाम।
सृष्टि का कर्त्ता है वही।
कभी नहीं किसी से डरता।
नहीं किसी से वैर वो रखता।
अमर स्वरूप कभी नहीं मरता।
किसी योनि से वे जन्म नहीं धरता।
स्वयंभू है कोई उसको पैदा नहीं करता।
ऐसे प्रभु की कृपा सब पर हो ॥

॥ जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥
॥१॥
सोचै सोचि न होवई
जे सोची लख वार ॥
चुपै चुप न होवई
जे लाइ रहा लिव तार ॥
भुखिआ भुख न उतरी
जे बंना पुरीआ भार ॥
सहस सिआणपा लख होहि
त इक न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होईऐ
किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा
नानक लिखिआ नालि ॥१॥

अर्थ : आदि काल से वही है सच्चा,
जुगों-जुगों से सच्चा है।
आज भी कायम वही सच्चा है।
नानक भविष्य में भी वह सच्चा है।
सोच (शौच) करे जो बार-बार,
जे करे लख वार सुचम न होई,
मौन धरे कोई मौन न होवे
बिन ध्यान लगे मन शांत न होवे
इच्छाओं की कभी भूख न मिटती
चाहे संसार की दौलत बांध के लावो
चतुराई चालाकी किसी काम न आवे
चाहे लाख चतुराई मन लावो
कैसे हम सच्चे बन पायें
कैसे झूठ का पर्दा फट जाये
प्रभु की इच्छा में जो चलते
नानक उन के कर्म संग चलते।

हुकमी होवनि आकार
हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ
हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु
हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥
इकना हुकमी बखसीस
इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभु को
बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै
त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

अर्थ : प्रभु आज्ञा से सृष्टि बनती
प्रभु आज्ञा की महिमा कही न जाये
प्रभु की आज्ञा से जीवन मिलता
प्रभु आज्ञा से बड़ाई पाये
प्रभु आज्ञा से दुख-सुख पायें
प्रभु आज्ञा से प्रभु कृपा पायें
प्रभु आाज्ञा से ही चक्कर खायें
जो कुछ है सब आज्ञा में ही
आज्ञा के बिना नहीं कुछ होये
जो प्रभु आज्ञा को ग्रहण कर लेते
उन के मन कभी अभिमान न होये।

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडिआईआं चार ॥
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥
गावै को साजि करे तनु खेह ॥
गावै को जीअ लै फिरि देह ॥
गावै को जापै दिसै दूरि ॥
गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥
कथना कथी न आवै तोटि ॥
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देंदा दे लैंदे थकि पाहि ॥
जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥
हुकमी हुकमु चलाइे राहु ॥
नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

अर्थ : प्रभु की महिमा को जो गावै, है ऐसी किस में गुण खान
उसकी कृपा कर करे जो बखान, हो ऐसी जिस की पहचान
उसकी महानता को जान सके जो, जो पहचाने उसके गुण आचार
जो गावै विद्या धन पाकर, बहुत कठिन उसके व्यवहार
तन को राख बनाये जो, और करे उसके गुण बखान
उसकी महिमा कैसे को गावै, जो मारे फिर दे दे प्राण
उसकी क्षमता को कैसे करें बखान, जो पास भी और है जो दूर
कैसे उसके गुण गावें, जो हर दम रहता पास हजूर
कितनी भी महिमा गावो, पर फिर भी वर्णन रहे अधूरा
भले ही करोड़ों लोग सुनायें, कर सकें वह गुण गाण न पूरा
दाता देता देता जाये, लेने वाले ही थक जायें
युग युग तक वह खाते रहते, फिर भी उसमें कमी न आये
उसकी आज्ञा से संसार चलता, उसकी आज्ञा राह दिखाये
सदा आनन्द में रहता है प्रभु, कहै नानक कैसा बेपरवाह सुभाये ।।

साचा साहिबु साचु नाइं
भाखिआं भाउ अपारु ॥
आखहि मंगहि देहि देहि
दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अगै रखीऐ
जितु दिसै दरबारु ॥
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ
जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अंम्रित वेला सचु नाउ
वडिआई वीचारु ॥
करमी आवै कपड़ा
नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक ऐवै जाणीऐ
सभु आपे सचिआरु ॥४॥

अर्थ : सत्य सरूप है स्वामी मेरा सच्चा उसका नाम
प्रेम भरे बोल हैं उसके प्यार से भरे कलाम
हर इच्छा को पूरा करता जो मांगे बारम्बार
दया का दाता सब कुछ देता मेरा करतार
मैं भला क्या अरपूं तुझ को
जित दर्शन होवे तेरे दरबार
मुख से कौन सी बाणी बोलूं
जिसे सुन प्रभु करे तुझे प्यार
गोधूली अमृत की बेला लेवों सच्चा नाउं
तेरी महिमा के गुन गाऊँ
मेरे भाग्य में उस के नाम की कृपा
नैनों से दर्शन कर मुक्ती पाऊँ
नानक कहे उसे ऐसा जानों
सत्य है ईश्वर और वही सच्च का रूप बखानो

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं
गुरमुखि रहिआ समाई ॥
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा
गुरु पारबती माई ॥
जे हउ जाणा आखा नाही
कहणा कथनु न जाई ॥
गुरां इक देहि बुझाई ॥
सभनां जीआं का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ॥५॥

अर्थ : कौन करे स्थापना उसकी कौन वह मूर्ति बनाये
आपे आप वह प्रगट होता जिस तन मैल न लागन पाये
सेवा करे जो मान वही पावै
नानक उस गुण भंडार के हर कोई गुण गावै
सुनो और गावो उसकी महिमा मन में भर कर प्यार
दुख दर्द सब बाहर छोड़के घर में भरें सुख के भंडार
गुरु की वाणी संगीत भरी वेदों का उसमें गान
गुरमुख के मन तन से होता उस प्रभु का मान
ईश्वर ब्रह्मा विष्णु तीनों उसी गुरु के रूप
सरस्वती लक्ष्मी पार्वती सब गुरु के हैं स्वरूप
भले ही उसको जान लूं पर कह न सकूं उसकी बड़ाई
भले ही उसको जान लूं लेकिन करूं कभी न उसकी बड़ाई
वर्णन के शब्द कहां से लाऊँ करूँ कौन चतुराई
हे गुरु ! मुझ को ज्ञान देहि इतना मुझे बताना
सब जीवों का एक ही पालनहारा
यह बात न मुझे कभी भुलाना ।।

तीरथि नावां जे तिसु भावां
विणु भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सिरठि उपाई वेखा
विणु करमा कि मिलै लई ॥
मति विचि रतन जवाहर माणिक
जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरां इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ॥६॥

अर्थ : तीर्थ पर स्नान करूँ अपने प्रभु को जो भाऊँ
जो मेरा प्रभु न रीझे तो क्यों तीर्थ में नहाऊँ
जो जो प्रभु की लीला है मैंने सब देखी भाली है
कर्मों का सब सुफल है बिन कर्मों के सब खाली है
रत्न जवाहर सब भाग में मेरे
जो अपने गुरु का उपदेश पाऊँ मैं
गुरु ने मुझ को ज्ञान दिया यही
सब जीवों को वह जीवन देता (पालनहारा)
न इम को कभी बिसराऊँ मैं ।।

जे जुग चारे आरजा
होर दसूणी होइि ॥
नवा खंडा विचि जाणीऔ
नालि चलै सभु कोइि ॥
चंगा नाउ रखाइि कै
जसु कीरति जगि लेइि ॥
जे तिसु नदरि न आवड़ी
त वात न पुछै के ॥
कीटा अंदरि कीटु करि
दोसी दोसु धरे ॥
नानक निरगुणि गुणु करे
गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइि न सुझड़ी
जि तिसु गुणु कोइि करे ॥७॥

अर्थ : चार जुगों की जो आयु पाये (5x4=20 हज़ार वर्ष)
फिर इस को दस गुणा और बढ़ाये (20x10=2 लाख वर्ष)
नौ खंडों में नाम हो उस का
सारी दुनिया सेवा में लागे
बड़े नाम वाला हो जाये वह
सब यश फिरते पीछे आगे
पर जिस पर प्रभु की दृष्टि पड़े न
फिर जग में रहे वह सदा अभागे
कीट पतंगों जैसा जीवन निकृष्ट
वह दोषी पर दोष धरे
नानक प्रभु दया का सागर निर्गुण को गुण दे
सारे जग में न ऐसा दिखे कोई
जो उस (प्रभु) के गुण का बखान करे

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥
सुणिऐ धरति धवल आकास ॥
सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥
सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

अर्थ : सिध, पीर, सुर, नाथ प्रभु नाम से ही मान पावें
नाम की महिमा धरती पाताल आकाश कहावे
नाम प्रभु का द्वीपां लोहां पातालां को बस में करे
जिन के हृदय बसे नाम प्रभु का मरने से वो नाही डरे
कहे नानक प्रसन्न चित्त रहते भगत दुनिया के सारे
उस के नाम की महिमा दुख पाप भी सभी बिदारे

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥
सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥६॥

अर्थ : प्रभु सिमरन से शिव, ब्रह्मा, इन्द्र सम्मान पाते
बुरे लोग भी प्रभु कृपा से जग में नाम कमाते
नाम को सुन कर योग, जुगति तन का सब पाते भेद
प्रभु नाम के सद प्रभाव से पढ़ते सब पुराण और वेद
नानक कहे भक्तजन जग में प्रसन्नचित हो रहते हैं
प्रभु के नाम की महिमा से दुख पाप सब कट जाते हैं

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥
सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

अर्थ : सन्तोष, संयम प्रभु नाम से मिलता और ज्ञान भी पायें
अठसठ तीर्थ के स्नान का नाम से ही पुण्य कमायें
नाम पढ़ने और सुनने से भक्तों को सम्मान मिले
नाम की शक्ति से दृढ़ता मन की और सहज ध्यान मिले
नानक कहत भगतन को मिले प्रसन्नता का मान
दूख पाप का नाश हो मिले सत संतोख ज्ञान ।।

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥

अर्थ : नाम को सुनकर सदगुण की नदी में राह बने
नाम की महिमा शेख, पीर, पातशाह बने
नाम के सदके अन्धों को भी दिखती है राह
नाम की महिमा से निथावें को भी मिलती पनाह
नानक भगत जन सदा ही हर्षाते हैं
नाम की महिमा से दूख पाप मिट जाते हैं।।

मंने की गति कही न जाइ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ॥
कागदि कलम न लिखणहारु॥
मंने का बहि करनि वीचारु॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥१२॥

अर्थ : जो मानता है प्रभु को कौन उसका बखान करे
वह पीछे पछताता है जो उस प्राप्ति का ब्यान करे
कागज़ कलम को पकड़ भला कौन उसे लिख पाया है
प्रभु को मानने वाला केवल उस पर विचार कर पाया है
उस निरंजन निरंकार का नाम बड़ा ही प्यारा है
बिरला कोई उस की कृपा पात्र का बना सितारा है

मंनै सुरति होवै मनि बुधि॥
मंनै सगल भवण की सुधि॥
मंनै मुहि चोटां ना खाइि॥
मंनै जम कै साथि न जाइि॥
अैसा नामु निरंजनु होइि॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइि॥१३॥

अर्थ : मन से जो मानेगा उस की ऊंची सुरत जग जाती है
ऐसे जन को तीनों लोकों की सुध हो जाती है
उसको मानने वाला मुख पर घाव नहीं है खाता
उसकी कृपा से वह नर फिर जम के साथ नहीं जाता
उस निरंजन प्रभु का नाम हृदय में बसाये जो
कोई मानने वाला ही है उसको जान पाये जो ।।

मंनै मारगि ठाक न पाइ॥
मंनै पति सिउ परगटु जाइ॥
मंनै मगु न चलै पंथु॥
मंनै धरम सेती सनबंधु॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ॥१४॥

अर्थ : ऐसे मानने वाले के मार्ग में बाधा कभी न आये
ऐसा मानने वाला सदा ही मान सम्मान को पाये
मानने वाला रास्तों के भटकाव से बच जाता है
एक प्रभु को मानने वाला उसका ही यश गाता है
ऐसा नाम प्रभु का निर्मल भाग्यवान ही पाते हैं
जो उस प्रभु में लीन रहे सदा वो ही उसे अपनाते हैं ।

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥
मंनै परवारै साधारु ॥
मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥
मंनै नानक भवहि न भिख ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

अर्थ : ऐसे मानने वालों के मुक्ति के द्वार खुल जाते हैं
ऐसे मानने वालों के परिवार भी सदगति पाते हैं
अपने संग अपने सेवकों को भी वह मुक्ति दिलाये
नानक ऐसे मानने वाले दर दर भीख न मांगने जाये
ऐसा निर्मल नाम है उसका जो सुख का दाता है
मानने वाला सच्चे मन से उसके ही गुण गाता है ।।

पंच परवाण पंच परधानु ॥
पंचे पावंहि दरगहि मानु ॥
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥
पंचा का गुरु इकु धिआनु ॥
जे को कहै करै वीचारु ॥
करते कै करणै नाही सुमारु ॥
धौलु धरमु दइिआ का पूतु ॥
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥
धवलै ऊपरि केता भारु ॥
धरती होरु परै होरु होरु ॥
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥
जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥

अर्थ : जिसने प्रभु को जाना है और माना है उसे प्रभु का नाम मिले
ऐसे ही प्रधान पंचों को दरगाह में भी सम्मान मिले
प्रभु में लीन प्रभु के सेवक गण सभा की शान हैं
ऐसे प्रभु के प्रिय जनों का उस गुरु में ही ध्यान है
लाख चेष्टा कर कर हारे प्रभु महिमा अपरम्पार है
उस की सृष्टि की महिमा ऐसी जिसका ना आर न पार है
जिसके सींगों पर टिकी है धरती वह धौल (सांड) दया का जाया है
सन्तोख के धागे से बांध के उसे टिकाया है
इस भेद को जिस ने समझा वह सच्चा ज्ञानी है
एक सांड के सींग पर टिकी है धरती यह बात जानी है
इस धरती के नीचे धरती उसके भी नीचे धरती है और
कैसे इसको थामे है वह कहां से पाया इतना ज़ोर
रंग बिरंगे जीव जन्तु सब जिनके नाम अनेक हैं
कभी न रुकने वाली कलम से लिखे सब कर्म विवेक हैं

ऐहु लेखा लिखि जाणै कोइि ॥
लेखा लिखिआ केता होइि ॥
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥
कीता पसाउ ऐको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआऊ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा ऐक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

अर्थ : उसकी महिमा का बखान लिख लिख कर कोई क्या जाने
लिख लिख हारा जग सारा पर उसका अन्त क्या पहचाने
कितना सुन्दर रूप तेरा कितना तू बलवान् है
कितनी तेरी कृपा है तेरी दया पे सब कुर्बान है
एक बचन से सृष्टि साजी यही सत्य है सदियों से
तेरी ही कृपा और बचन से जल मिलता लाखों नदियों से
मुझ में इतना ज्ञान कहां तेरी महिमा का बखान करूँ
लाख जतन कर हार गया कैसे स्वयं को मैं कुर्बान करूँ
जो तेरी इच्छा है वही मेरे मन आवे है
इस नश्वर जगत में प्रभु तू ही अमर कहावे है

असंख जप असंख भाऊ ॥
असंख पूजा असंख तप ताऊ ॥
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥
असंख जोग मनि रहि ऊदास ॥
असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥
असंख सती असंख दातार ॥
असंख सूर मुह भख सार ॥
असंख मोनि लिव लाइि तार ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा ऐक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

अर्थ : अनगिनत लोग जप करते अनगिनत तुझसे प्रेम करें
अनगिनत भगत पूजा करते अनगिनत जन नितनेम करें
अनेकों लोग ग्रन्थों को पढ़ते मुख से वेद सुनाते हैं
अनेकों रहें उदास और वन में जा जोग कमाते हैं
अनेकों भगत जन ज्ञान भरे तेरा ही गुण गान करें
अनेकों सद्‌गुणों के अधिकारी तेरे नाम पे पुन दान करें
अनगिनत योद्धा रणभूमि में मुख पे वार सहते हैं
अनगिनत भगत मौन धारण कर तेरी लिव में सदा रहते हैं
हे प्रभु तेरी महिमा का भला मैं कैसे सोच विचार करूँ
मुझ में इतनी समरथ कहां जो तुझ पे मैं वार सकूँ
तेरी इच्छा जो भी करे तू जो भी तेरे मन आवे
तेरी अमर कृपा से जो भी मिले वही दास तेरे के मन भावे

असंख मूरख अंध घोर ॥
असंख चोर हरामखोर ॥
असंख अमर करि जाहि जोर ॥
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥
असंख पापी पापु करि जाहि ॥
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥
असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥
नानकु नीचु कहै वीचारु ॥
वारिआ न जावा ऐक वार ॥
जो तुधु भावै साइ भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

अर्थ : अनगिनत लोग महामूर्ख और अंधे
अनगिनत करें चोरी हराम के धंधे
अनगिनत अत्याचारी अपना आदेश चलाते हैं
अनगिनत हत्यारे काटें शीश जुल्म कमाते हैं
अनगिनत पुण्य को त्याग सदा ही पाप कर जाते हैं
अनगिनत झूठ फरेब परपंच का चक्र चलाते हैं
अनगिनत पतित पापी सदा गन्दगी खाते हैं
अनगिनत लोग पर निन्दा कर सिर पाप की गांठ उठाते हैं
नानक नीच सोच विचार के बार बार यह फरमाये
मैं न्यौछावर उस प्रभु पर जिसका सब ही गुण गाये
तेरी इच्छा तेरी लीला उसी में सब की भलाई है
केवल तू ही अमर अगोचर यही एक सच्चाई है ॥

असंख नाव असंख थाव ॥
अगंम अगंम असंख लोअ ॥
असंख कहहि सिरि भारु होइि ॥
अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥
अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥
जिनि ऐहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥
जिव फुरमाये तिव तिव पाहि ॥
जेता कीता तेता नाऊ ॥
विणु नावै नाही को थाऊ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा इक वार ॥
जो तुधु भावै साइ भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

अर्थ : सर्वव्यापी दाता तू है तेरे नाम अनेक हैं
दीप लोह पाताल अनेकों दुर्गम हैं पर तेरी टेक हैं
असंख्य भी कहना ठीक नहीं तुझे गिनती में बांधना भूल हैं
शब्दों अक्षरों से तेरी महिमा पर सभी चढ़ाते फूल हैं
अक्षरों शब्दों से ही ज्ञान की चर्चा और गुणों को गाते हैं
अक्षरों से शब्द बने जो बाणी बन तेरी महिमा सुनाते हैं
अक्षरों से माथे पर भाग्य के संयोग भी पढ़े जाते हैं
जो हमारा भाग्य लिखे उसके माथे पर कोई संयोग नहीं
सब कुछ मिलता उस की कथनी से जो आदेश नहीं तो भोग नहीं
जितनी सृष्टि उसने साजी उतना ही उस का नाम हुआ
उसके नाम बिना सब अधूरा नहीं पूरा कोई काम हुआ
ऐसे प्रभु की रचना पर कैसे मैं विचार करूँ
मेरा मुझ में कुछ भी नहीं जो तुझ पे मैं बलिहार करूँ
तेरी महिमा तेरी इच्छा इसी में सबका उपकार है
सृष्टि भले ही रहे न रहे तू अमर निरंकार है

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥
मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
दे साबूणु लईऐ एहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
एहु धोपै नावै कै रंगि ॥
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

अर्थ : हाथ पैर और शरीर पर जब भी मैल जम जाये
पानी से धोते ही सारी गन्दगी साफ हो जाये
विष्टा-मूत्र से भर जायें जब कपड़े
वो भी स्वच्छ हो जोय जब कोई साबुन रगड़े
मन मैला हो जाये जब हो पापी का संग
वो भी साफ हो जाये जो लागे प्रभु नाम का रंग
कहने से ही पुण्य नहीं कोई न कहने से पापी बन जाये
जो जो कर्म तू करता उसमें वो कर्म ही संग में जाये
मीठा कड़वा जो बोओगे वही पड़ेगा तुझ को खाना
नानक कहे उसी के हुक्म से है तेरा आना जाना

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥
जे को पावै तिल का मानु ॥
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥
विणु गुण कीते भगति न होइ ॥
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥
कवणु सु वेला वखतु कवणु
कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सी ऋतु माहु कवणु
जितु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥

अर्थ : तीर्थ तप दया पुन दान करे
तिल समान फल जो मन में अभिमान भरे
सुनकर माना मान के उसको मन में उसे बसा लिया
अपने अन्दर के हृदय प्रारांगण को धो उसके योग्य बना लिया
तू ही सदगुणों का मालिक मैं निर्गुण गुण कोई नहीं।
सच्ची भगती कहा से होगी जो पले सदगुण कोई नहीं
तेरी महिमा अपरम्पार तू ब्रह्मा है तू ही अमृतवाणी
सत्यं शिवम् सुन्दरम का रूप है तू तेरी अमर अकथ कहानी
वह कौन पवित्र समय था वह कौन सुहानी बेला
वह कौन सुहानी तारीख थी वह कौन सा वार सुहेला
ऋतु थी कौन और कौन महीना जो तेरे मन भाया
जिस घड़ी यह सृष्टि रची धरती आकाश बनाया
लगन शगुन न ढूंढ सके पंडित और ज्ञानी
वेद पुराण लिख डाले पर तेरी महिमा न जानी ।।

वखतु न पाइिए कादीआ
जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै
रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे
आपे जाणै सोई ॥
किव करि आखा किव सालाही
किउ वरनी किव जाणा ॥
नानक आखणि सभु को आखै
इक दू इकु सिआणा ॥
वडा साहिबु वडी नाई
कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै
अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

अर्थ : काज़ी मुल्ला थक थक हारे न तय कर पाये तारीख
भले ही खुदा के फज़ल में वे लिखे कुराण शरीफ
जोगी भी न खोज सके वह तारीख और वार
ऋतु महीने सभी में खोजा अन्त गये वह हार
जिसने है यह सृष्टि बनाई रचा सब संसार
अपनी लीला आप पछाणे आपे सृजनहार
कैसे उसका बखान करूँ कैसे उका गुणगान करूँ
नानक सब को देखे बोले सब को
एक से बढ़ कर एक सयाना कैसे मैं ब्यान करूँ
वह महान है सबका मालिक बड़ा है उसी का नाम
जिस ने यह कौतुक रचाया-यह संसार बनाया
नानक कहे जो अपने को बड़ा बखाने
कोई उस की कदर करे न, आखिर वह पछताया

पाताला पाताल
लख आगासा आगास ॥
उड़क उड़क भालि थके
वेद् कहनि इक वात ॥
सहस अठारह कहनि कतेबा
असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऔ
लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऔ
आपे जाणै आपु ॥२२॥

अर्थ : लाखों हैं पाताल फिर पातालों में पाताल
लाखों हैं आकाश फिर आकाशों पे आकाश
ढूंढ ढूंढ के सब थक बैठे
वेदों ने भी यही बात कही
सारी अठारह हज़ार पुस्तकें
सभी ने तेरी कीरती की बात कही
लिख न पाया कोई तेरी महिमा
लिखने वालों का ही नाश हुआ
नानक उसकी की है सब बड़ाई
आपे जाने कैसे प्रकाश हुआ ।।

सालाही सालाहि
ऐती सुरति न पाईआ॥
नदीआ अतै वाह
पवहि समुंदि न जाणीअहि॥
समुंद साह सुलतान
गिरहा सेती मालु धनु॥
कीड़ी तुलि न होवनी
जे तिसु मनहु न वीसरहि॥२३॥

अर्थ : सब उसकी बड़ाई करें
लेकिन समझ न पायें उसकी थाह
नदियां मिल कर अगाह सागर में
सागर सा सम्राट बने, वाह
पर्वत की ऊंचाई सी दौलत
एक चींटी समान नहीं
यदि मन से प्रभु नाम बिसरै
तो चींटी समान भी मान नहीं।

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥
अंतु न जापै कीता आकारु ॥
अंतु न जापै पारावारु ॥
अंत कारणि केते बिललाहि ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥
ऐहु अंतु न जाणै कोइि ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइि ॥
वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
ऐवडु ऊचा होवै कोइि ॥
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइि ॥
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

अर्थ : अन्त नहीं कुछ उसकी महिमा का न उसका कोई जाने अन्त
न उसकी करणी का, न उस की दात का आये अन्त
न उसकी महिमा का कहीं अन्त दिखे न उसकी बड़ाई का
जान न पायें प्रभु के मन अब और छिपी भलाई का
जग रचना कैसे की उस ने उसका भी कोई छोर नहीं
आर पार को कैसे बांधा दिखती कोई डोर नहीं
कितने ही प्राणी तड़पते बिलखते तेरे अन्त को पाने को
कितने ही प्रयत्न करें कि तेरे आदि अन्त को जाने वो
इस रहस्य को जानने खातिर कुछ भी नहीं है जोड़ा
जितने भी तेरे गुण गायें पर लगता है सब थोड़ा
बड़े मालिक का नाम है ऊँचा और अपार
ऊँचे से और ऊँचा है तेरा नाम मेरे करतार
इतना तू महान और ऊँचा है जग जाने सारा
अपनी ऊँचाई को स्वयं तू जाने तेरा कौतुक न्यारा
कितना ऊँचा है तू दाता तू ही जाने आप
नानक मांगे तेरी नज़र की रहम करम की दात ॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥
केते मंगहि जोध अपार ॥
केतिआ गणत नही वीचारु ॥
केते खपि तुटहि वेकार ॥
केते लै लै मुकरु पाहि ॥
केते मूरख खाही खाहि ॥
केतिआ दूख भूख सद मार ॥
ऐहि भि दाति तेरी दातार ॥
बंदि खलासी भाणै होइ ॥
होरु आखि न सकै कोइ ॥
जे को खाइकु आखणि पाइ ॥
एहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥
आपे जाणै आपे देइ ॥
आखहि सि भि केई केइ ॥
जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

अर्थ : उसकी कृपा और करम की गाथा कोई लिख न पाये
तिल समान लालच नहीं उसको वह दाता देता आये
कितने ही शूरवीर मांगें शक्ति उसके द्वार
कितने ही मन मांगे फल पायें जिनकी गिनती अपरम्पार
कितने ही सब कुछ पाकर होते परेशान बेकार
कितने ही पहले तो ले लेवें देने वक्त मुकर जाते हैं
कितने ही मूर्ख अज्ञानी केवल हराम का खाते हैं
कितने ही जीव दुख क्लेष पावें और खाते सदा ही मार
उनको सीधी राह पे लाने को दाता ही देता सब आधार
हर बन्धन मोह माया के टूटें तेरी कृपा से करतार
और मुक्ति की राह न कोहे, ढूंढ थका सारा संसार
अगर कोई मन्दबुद्धि प्राणी और किसी के गुण गाये
दर दर भटके चैन न पाये हर दर मुँह पर चोटां खाये
वह आप ही समझे आपे देवे ऐसा मेरा दाता है
बुद्धिमान जन यह भी समझे किर औरों को समझाता है
जिस पर कृपा दृष्टि हो रहमत, सब उसकी की महिमा बढ़ाते
नानक कहे वह राजाओं का राजा जिसके हैं सब गुण गाते

अमुल गुण अमुल वापार ॥
अमुल वापारीइे अमुल भंडार ॥
अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥
अमुल भाइि अमुला समाहि ॥
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइि ॥
आखि आखि रहे लिव लाइि ॥
आखहि वेद पाठ पुराण ॥
आखहि पड़े करहि वखिआण ॥
आखहि बरमे आखहि इंद ॥
आखहि गोपी तै गोविंद ॥

अर्थ : तेरे गुण अनमोल और अनमोल तेरा व्योपार
व्यापारी भी हैं अनमोल और अनमोल तेरा भंडार
जो आते वो भी अनमोल वैसे ही आने वाले
अनमोल तेरे प्रेम रंग राते सभी हैं तुम में समाने वाले
है उनका अनमोल धर्म अनमोल उनके राज दरबार
हैं अनमोल तोल तराजू वह बाट भी जिनसे करे व्यापार
उसकी रहमत है अनमोल है अनमोल बखशीष निशान
हैं अनमोल करम उस करीम के हैं अनमोल उसके फरमान
उसकी दया का अंदाजा लगाने लाखों लोग हैं हारे
चेष्टा कर कर हारे सभी फिर तेरी शरण सिधारे
वेदों और पुराणों ने भी तेरे हैं गुण गाये
पढ़े लिखे विद्वानों ने तेरे अनेक कौतुक बताये
ब्रह्मा विष्णु और इन्द्र भी तेरी दया का करें बखान
कई गोपियां कान्हा कई तेरी महिमा को करें बखान

आखहि ईसर आखहि सिध॥
आखहि केते कीते बुध॥
आखहि दानव आखहि देव॥
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव॥
केते आखहि आखणि पाहि॥
केते कहि कहि उठि उठि जाहि॥
ऐते कीते होरि करेहि॥
ता आखि न सकहि केई केइ॥
जेवडु भावै तेवडु होइ॥
नानक जाणै साचा सोइ॥
जे को आखै बोलुविगाडु॥
ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु॥२६॥

अर्थ : कहते हैं कितने ही ईश्वर और कितने ही सिद्ध
कहते हैं ईश्वर ने पैदा किये कितने ही बुद्ध
कहते हैं सुर असुर दोनों ही हैं उस प्रभु की संतान
कहते हैं देवता, मानव मुनि करते हैं उसी का ब्यान
कितने ही तेरे महिमा का गुण गा गा आते हैं
कितने ही तेरी महिमा के सदके सुकृपा पा उठ जाते हैं
जैसी सृष्टि कर जगत बनाया और भी कितने बन जायें
फिर भी कौलुक तेरे दाता विद्वतजन न कह पायें
जैसा तेरे मन आवे प्रभु ऐसी तेरी बड़ाई हो
नानक कहे तेरी कृपा से समझे तेरी सच्चाई को
अगर किसी को लागे वह समझ गया तेरा विस्तार
ऐसा कहने वाला मूर्ख भी है और गंवारों का सरदार

सो दरु केहा सो घरु केहा
जितु बहि सरब समाले ॥
वाजे नाद अनेक असंखा
केते वावणहारे ॥
केते राग परी सिउ कहीअनि
केते गावणहारे ॥
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु
गावै राजा धरमु दुआरे ॥
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि
लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥
गावहि इसरु बरमा देवी
सोहनि सदा सवारे ॥
गावहि इंद्र इद्रासणि बैठे
देवतिआ दरि नाले ॥
गावहि सिध समाधी अंदरि
गावनि साध वीचारे ॥
गावनि जती सती संतोखी
गावहि वीर करारे ॥

अर्थ : वह सुन्दर दर घर कैसा
जिस में बैठ वह सबको सम्भाले
अनेक नगाड़े बाजे बजते
कितने ही हैं बजाने वाले
राग रागनियां बजती कितनीं
कितने ही राग सुनायें
वायु , जल और अग्नि गायें
धर्म द्वार खड़े राजा गायें
चित्रगुप्त लेखे के लिखारी
जो धर्म कर्म का करें विचार
ईश्वर, ब्रह्मा देवियां गायें
सुन्दर कर कर बैठे श्रृंगार।
अपने आसन बैठे इन्द्र भी गायें
देवता सोहें उसके दरबार
अडिग समाधि में सिद्ध भी गाते
साध भी गायें कर कर विचार
जती सती संतोखी भी गाते
गायें वीर सूरमा खड़े तेरे द्वार ।।

गावनि पंडित पड़नि रखीसर
जुगु जुगु वेदा नाले ॥
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि
सुरगा मछ पइिआले ॥
गावनि रतन उपाऐ तेरे
अठसठि तीरथ नाले ॥
गावहि जोध महाबल सूरा
गावहि खाणी चारे ॥
गावहि खंड मंडल वरभंडा
करि करि रखे धारे ॥
सेइी तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि
रते तेरे भगत रसाले ॥
होरि केते गावनि
से मै चिति न आवनि
नानकु किआ वीचारे ॥

अर्थ : ऋषि मुनी पंडित भी गाते
जो करें जुग जुग वेद पाठ विचार
मन को मोहने वाली सुन्द्रियां भी गायें
गायें स्वर्ग पृथ्वी पाताल
इत्न जवाहर धन जो तुम ने बनाये
गायें अठसठ तीर्थ देकर ताल
सूरवीर यौद्धा महाबली गायें
अंडज, जेरज, सेतज उतभुज गायें
खंड, मंडल, ब्रह्मंड भी गाते
तुम जिन्हें बनाते फिर उन्हें चलाते
जो तुझ को प्यारे मन को भायें तेरे
जो तेरे रंग में रंगे तेरे रस में नहाते
और कौन तेरी महिमा गाते
वह मैं सोच न पाऊँ
नानक कर विचार फरमाते ।।

सोई सोई सदा सचु साहिबु
साचा साची नाई ॥
है भी होसी जाइ न जासी
रचना जिनि रचाई ॥
रंगी रंगी भाती करि करि
जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥
करि करि वेखै कीता आपणा
जिव तिस दी वडिआई ॥
जो तिसु भावै सोई करसी
हुकमु न करणा जाई ॥
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु
नानक रहणु रजाई ॥२७॥

अर्थ : वही है सच्चा सदा से ही मालिक सबका
उसकी ही महिमा सच्ची नाम सच्चा रब्ब का
न वह जनमा न ही मरेगा वह स्वयंभू अवतार
जिसने साजी सृष्टि रचा है सब आकार
रंग बिरंगी दुनिया सारी अनेक भांति सजाई
अपनी रचना को आप निहारे पाले
जैसी उत्तम है उसकी बड़ाई
उसकी इच्छा जो है करे वो
बिना आज्ञा कुछ भी होवत नहीं
वही जगत का सच्चा स्वामी और राजा
नानक कहे सब उसकी अमर रजाई

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली
धिआन की करहि बिभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइिआ
जुगति डंडा परतीति ॥
आई पंथी सगल जमाती
मनि जीतै जगु जीतु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु ऐको वेसु ॥२८॥

अर्थ : अगर सन्तोष की मुंदरा पहने श्रम की हो खप्पर झोल
प्रभु में ध्यान की भभूत बदन पर माथे हरिनाम की रोली
गोदड़ी में तू मौत छुपा ले तन विषय विकार से न्यारा
जुगती जोग की दंड श्रद्धा का करे मन से नाश विकारा
सब से प्रेम भाव से मिलते आई पंथ जैसा व्यवहार
जिस ने मन को जीत लिया वह विजय करे सारा संसार
ऐसे ही सज्जन पुरख को है प्रभु का आदेश
आदि काल जुग जुग से है वही प्रभु सैभंग
कभी न बदले रूप प्रभु का सदा ही अमर है इक रंग ।।

भुगति गिआनु दइिआ भंडारणि
घटि घटि वाजहि नाद॥
आपि नाथु नाथी सभ जा की
रिधि सिधि अवरा साद॥
संजोगु विजोगु दुइि कार चलावहि
लेखे आवहि भाग॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु ऐको वेसु ॥२६॥

अर्थ : ज्ञान का वो भोजन करते दया के भरे भंडार
हर हृदय में अनहद नाद बजे
है वही नाथ जिसने सृष्टि को बांधा
हर रिद्धि सिद्धि के झूठे स्वाद तजे
मिलने का सुख बिरहा का दुख मिलकर सारे काम करें
जो भी भाग्य में लिखा दाता ने हम उसको स्वीकार करें
है तुम को आदेश प्रभु का तुझे आदेश
आदि काल से निषकलंक, अमर वह दाता
जिसका हर युग में एक ही वेश ।।

ऐका माइी जुगति विआइी
तिनि चेले परवाणु ॥
इकु संसारी इकु भंडारी
इकु लाइे दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै
जिव होवै फुरमाणु ॥
एहु वेखै एना नदरि न आवै
बहुता ऐहु विडाणु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु ऐको वेसु ॥३०॥

अर्थ : एक माया (माई) प्रसूत हुई और जन्मी संतान
तीन पुत्रों को जन्म दिया एक से एक महान
एक ने जग की रचना (सृष्टि) की, एक ने खोले भंडार
ब्रह्मा रचयिता, विष्णु पालक, शिव करे संहार
जैसा उस के मन आवे, वैसे ही संसार चलाये
जैसा आदेश तैसा ही सुनाये
सब को देखे भाले स्वामी पर स्वयं किसी को नज़र न आये
कैसा अद्भुत कौतुक उसका है कैसा चमत्कार
उसकी आज्ञा माने सभी सब उसे करें नमस्कार
निष्कलंक, निष्काम, अजन्मा प्रभु मेरो
हर युग से एक ही रूप एक ही धाम है तेरो।

आसणु लोइि लोइि भंडार ॥
जो किछु पाइिआ सु ऐका वार ॥
करि करि वेखै सिरजणहारु ॥
नानक सचे की साची कार ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति
जुगु जुगु ऐको वेसु ॥३१॥

अर्थ : हर एक भवन में उसका ठिकाना है सदा भरे भंडार
जिसको बख्शे दात वह अपनी भर दे झोली एक ही बार
सृष्टि का सिरजन हार स्वामी सब जीवों को करे प्यार
नानक कहे है सचा साहिब है सच्च उसका आकार
उसी के लिये है आज्ञा माने जो सदा उसका आदेश
हर जुग में एक रंग है उसका हर जुग में सुन्दर वेश ।।

इक दू जीभौ लख होहि
लख होवहि लख वीस॥
लखु लखु गेड़ा आखीअहि
ऐकु नामु जगदीस॥
ऐतु राहि पति पवड़ीआ
चड़ीऐ होइ इकीस॥
सुणि गला आकास की
कीटा आई रीस॥
नानक नदरी पाईऐ
कूड़ी कूड़ै ठीस॥३२॥

अर्थ : एक रसना हो या लाखों रसना
या फिर बीस लाख हो जायें
लाखों बार घूम फिर कहिये
और एक नाम जगदीश का गायें
प्रभु की राह पर चल चढ़े सीढ़ियां
और एक रूप प्रभु का पाईये
सुन के ऊँची आकाश की बातें
चींटियों को भी आई रीस
नानक कहे प्रभु दृष्टि मिले दया से
झूठे की झूठी माया न दे बख्शीष

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥
जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइि ॥
नानक उतमु नीचु न कोइि ॥३३॥

अर्थ : बोलने पर कब जोर किसी का मौन रहने पर किसका काबू
मांगने पर नहीं जोर किसी का देने पर फिर किस का काबू
जीवन पर नहीं जोर किसी का और मृत्यु पर किस का काबू
ज़ोर नहीं धनमाल राज पर नहीं है झूठे मान पे काबू
सुरत समाधि पर जोर नहीं है नहीं ज्ञान ध्यान पे काबू
नहीं किसी ऐसी जुगती पर जोर संसार त्यागने पर नहीं काबू
बल है जिसकी बाहों में है वही मेरा समरथ स्वामी
कहे नानक स्वयं कोई ऊँचा नहीं नीचा
सब घट तू बसता अन्तर्यामी

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥
करमी करमी होइ वीचारु ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥
कच पकाई एथै पाइ ॥
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

अर्थ : रैन दिवस ऋतुएँ बनाईं और रचे दिवस तिथियां और वार
व्वायु जल सब तेरी रचना अगनी पाताल का आर न पार
इन सबके संग धरती बनाई जहां सत्य धर्म के ही व्यवहार
इनके संग जीने के साधन प्रकृति के सौन्दर्य के रंग
ऐसे ऐसे जीव बनाये जिनके नामों का नहीं कोई अंत
अपने अपने करमों के सदके होता प्रभु का सद विचार
प्रभु भी सच्चा और है उसके न्याय का सच्चा दरबार
ज्ञानी, सिद्ध विद्वान वहां पर उचित आसण विराजे हैं
कृपा, दृष्टि कर उनको दाता बडियाई दे साजे हैं
कोन बड़ा है कौन है छोटा वहां इसका निपटारा होता है
नानक कहे सच्चे दरबरार में इस सच्च की ओर इशारा होता है

धरम खंड का ऐहो धरमु ॥
गिआन खंड का आखहु करमु ॥
केते पवण पाणी वैसंतर
केते कान महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि
रूप रंग के वेस ॥
केतीआ करम भूमी मेर केते
केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते
केते मंडल देस ॥
केते सिध बुध नाथ केते
केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते
केते रतन समुंद ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी
केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते
नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

अर्थ : अपने कर्त्तव्य का पालन करना, धर्म खंड का काम है
कैसे कर्म कर कर्म योगी बने बताना ज्ञान खंड का काम है
वायु, जल, अग्नियां कितनी उस प्रभु ने बनाई हैं
कृष्ण कितने और महेश हैं कितने उसने लीला रचाई है
कितने ही ब्रह्मा पुतलों को घड़कर मानव तैयार करें
कितना सुन्दर रंग रूप दे जिसको हर कोई प्यार करे
कितनी ही कर्म भूमियां जहां कार कमावें
कितने ही खड़े किये जो मेरू पर्वत कहावें
ध्रुव भगत के जीवन उपदेश कई
कितने ही इन्द्र राजे चांद और सूरज
कितने ही भूमंडल और देश कई
कितने ही साधक सिद्ध बुद्ध और नाथ
है देवियों के आभूषण वेस कई
कितने ही हैं देवता और राक्षस और मुनि ज्ञानी मौनी
रतनों से भरे कई समुद्र बनाये
कितने ही जीवों की जातियां और अनेकों बोलियां
कितने ही बादशाह और सम्राट सजाये
कितने ही तेरी लिव में लाग तरे
नानक तेरी महिमा का कोई अन्त न पाये ॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥
तिथै नाद बिनोद कोड अनदु ॥
सरम खंड की बाणी रूपु ॥
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

अर्थ : ज्ञान अवस्था में प्राणी के ज्ञान का ही प्रकाश है
वहां पे संगीत की रागनियां बजती हंसी खुशी का राज है
सरम खंड मुशकत का खंड जहां सुन्दरता का रूप है
जहां पे सुन्दर रूप की रचना हर दृष्टि से अनूप है
उस अवस्था का वर्णन कर न साके कोये
अगर कोई प्रयास करे तो फिर पछताये रोये
वहां पर मन की जागृति से जन की मति बुद्धि सवारे
इस अवस्था में देवों और सिद्धों का रूप निखारे

करम खंड की बाणी जोरु ॥
तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥
ना एहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥
करहि अनंद सच्चा मनि सोइ ॥
सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
वेखै विगसै करि वीचारु ॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

अर्थ : बखशिश दया की अवस्था में बल और शौर्य का राज है
जहाँ पर केवल पारब्रह्म बिराजे न ही और किसी से काज है
यौद्धा महाबली वहां बसते उनकी शोभा अनूप है
उनमें राम रमा नस नस में वह देव लोक स्वरूप है
इस मेहर की दुनिया में प्रभु के संग पिरोये जाते हैं
अमर हैं वे कभी मरें न और कोई धोखा नहीं खाते हैं
ऐसे सुन्दर वो बन जाते हैं कि एक रंग में संजोये जाते हैं
उनके रूप का वर्णन करने वाले उसी रूप में खोये जाते हैं
उसके मन पर राज प्रभु का और चहुं दिशा राम की सत्ता
बखशिश कृपा कई भवनों (लोकों) में हो भगतों का वास
उस प्रभु संग रहें सदा आनंदित होये हर्ष का सदा विगास
सत्य खंड में रहे प्रभु मेरा जो है निरंकार
अपनी कृपा दृष्टि से करता सब का वह उपकार
एक रूप प्रभु संग होये जन को दिखे अनेक खंड ब्रह्मंड
जिनकी महिमा का वर्णन करें तो पावें न अंत
वहां कई लोकों के दर्शन होते दिखें सृष्टि के आकार
जैसे आज्ञा प्रभु की करें नतमस्तक सभी व्यवहार
अपनी सृष्टि को देख प्रसन्न हो प्रभु उन पर करे विचार
बड़ा कठिन है वर्णन इसका कहे नानक अनुभव करे संसार

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥
भउ खला अगनि तप ताउ ॥
भाँडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥सलोकु॥

अर्थ : होवे जत रूपी निर्मल दुकान और धैर्य बने सुनियार
अहरणि बने जब मति श्रद्धा भगतन की, ज्ञान का हो हथियार
प्रभु के भय की बना के धौंकनी श्रम मेहनत की आग जला
प्रेम की कुठाली (भांडा) होवे उस में अमृत प्रभु नाम गला
उस सच्ची टकसाल में घड़, ले मोहर प्रभु नाम की बाणी
नानक कहे उस सच्चे नाम की दौलत दूर करे सब कष्ट प्राणी ।।

शलोक

पवणु गुरु पाणी पिता
माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ
खेलै सगल जगतु ॥
चंगिआईआं बुरिआईआं
वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी
के नेड़ै के दूरि ॥
जिनी नामु धिआइआ
गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले
केती छुटी नालि ॥१॥

शलोक

अर्थ : पवन (श्वास) गुरु समान है पानी देता पिता का प्यार
धरती जीवन देने वाली है माता जाने सारा संसार
रात को सोना दिन मेहनत करना दोनों जगत खेले खेल
अच्छे परोपकारी कर्म और बुरे कामों का लेखा
प्रभु के दर पर धर्म राज बताता, जो कुछ उसने देखा
अपने कर्मों के प्रताप से हीतो
कोई प्रभु के निकट चरण बिराजे, हो जाये कोई दूर
जिन्हों ने प्रभु नाम का सिमरन किया
उनकी मेहनत सफल हुई आकर संसार
नानक कहे इनके मुख मंडल पर ज्योति प्रकाश प्रभु का
हुये मुक्त स्वयं और संग मुक्त किया परिवार

गुरु महाराज के आशीर्वाद
और कृपा से जपुजी साहिब का
पद्य (कविता) में अनुवाद
आज सम्पूर्ण हुआ।